



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13

अंक : 01

सितम्बर, 2025

मूल्य : ₹2.00



मार्गदर्शन : कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित

79वें स्वाधीनता दिवस पर वेटेरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा दिये गये उद्बोधन के मुख्य अंश



राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के इस भव्य एवं ऐतिहासिक प्रांगण में भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। हम इस बात को जानते भी हैं और जानना चाहिए भी कि भारत जैसे विशाल सांस्कृतिक देश ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य पाने तक क्या-क्या कुर्बानियां दी थी। लगभग 150 वर्षों की गुलामी के बाद एक समप्रभुत्व एवं स्वतंत्र देश के रूप में 15 अगस्त, 1947 को उभरे थे। विभाजन विभीषिका दिवस मनाने का उद्देश्य यही है कि अगला विभाजन इस देश का नहीं होने देवें इसका संकल्प हमें अपने आप से लेना होगा। जो संसाधन हमारे पास हैं उन सभी का भरपूर उपयोग करते हुए यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत न केवल विश्व में अपनी पहचान को पुनर्स्थापित करे बल्कि साथ-साथ यह भी स्थापित

करे कि भारत के साथ जो अन्याय विगत वर्षों में किया गया वे अन्याय हम भूलें नहीं। प्रदेश में पशुचिकित्सा एवं पशु कल्याण का दायित्व हमारे कंधों पर है पशु कल्याण सीधा-सीधा पशुपालक एवं जन-कल्याण से जुड़ा हुआ है। अतः पशुचिकित्सा शिक्षा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध, आविष्कार, ज्ञानवर्द्धन एवं कौशल तकनीक हस्तांतरण कर हमें प्रदेश की उन्नति एवं कल्याण में अपना योगदान देना होगा। हमारा कर्तव्य है कि हम उच्च गुणवत्ता वाले मानव संसाधन तैयार करें, नवीन तकनीकों का विकास करें और प्रदेश में किसानों एवं पशुपालकों की आय बढ़ाने में नवीन तकनीकी ज्ञान का प्रसार करें। हमारे लिए गर्व की बात है कि हाल ही में वेटेरनरी विश्वविद्यालय ने अपना अष्टम् दीक्षांत समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया जिसमें माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय श्री हरिभाऊ बागडे द्वारा छात्र-छात्राओं को उपाधियां एवं पदक प्रदान किये गये। यह भी गर्व का विषय है कि माननीय मुख्यमंत्री ने बजट घोषणा में राजुवास, बीकानेर में पशुओं के लिए नेत्र चिकित्सा स्पेशियलिटी सेंटर खोलने की घोषणा की है, जिसकी स्थापना से विश्वविद्यालय की सुपर स्पेशियलिटी पशुचिकित्सा सेवाओं में बढ़ोतरी होगी तथा पशुपालकों को इस सेवा का लाभ मिलेगा। राज्य सरकार के वित्तीय सहयोग से बीकानेर में एग्रियों ट्रांसफर टेक्नोलॉजी प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है, साथ ही आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली के वित्तीय सहायता से डेयरी उत्पाद विनिर्माण इकाई की स्थापना की जा रही है जो कि विद्यार्थियों में उद्यमिता को बढ़ाने में मदद करेगी। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वेटेरनरी महाविद्यालय नवानियां, उदयपुर में माननीय राज्यपाल महोदय, राजस्थान द्वारा महाविद्यालय में अतिथिगृह, चार दिवारी और सड़क निर्माण के विकास कार्यों का शिलान्यास किया गया जो कि विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। वेटेरनरी विश्वविद्यालय के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग रूम का उद्घाटन माननीय पशुपालन, डेयरी, गोपालन एवं देवस्थान विभाग मंत्री श्री जोराराम जी कुमावत के कर कमलो से किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र एवं पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से पशुपालकों को उनके क्षेत्र में ही उन्नत पशु उत्पादन तकनीकों का प्रशिक्षणों के माध्यम से लाभ मिल रहा है जिससे प्रतिवर्ष हजारों पशुपालक एवं किसान लाभान्वित हो रहे हैं। इसके साथ ही वेटेरनरी विश्वविद्यालय द्वारा विगत एक वर्ष में पशुपालकों एवं किसानों के साथ साथ फील्ड पशुचिकित्सकों, वेटेरनरी कम्पाउंडरों, स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों, गौशाला प्रबंधकों एवं युवाओं को विभिन्न क्षेत्र में लघु एवं दीर्घकालीन प्रशिक्षणों, वैज्ञानिक सम्मेलनों, कॉन्फ्रेंस इत्यादि का सफल आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय का उद्देश्य पशुपालकों के हितों को सर्वोपरि रखते हुए पशुचिकित्सा सेवा का सुदृढीकरण एवं नवाचारों के माध्यम से प्रदेश में पशुचिकित्सा एवं पशुपालन को उत्कृष्ट शिखर पर पहुंचाना है। मैं शिक्षा, शोध एवं प्रसार में उल्लेखनीय कार्य करने वाले सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को पुनः बधाई देता हूँ। देश की आजादी के प्रति बलिदान देने वाले वीरों, शहीदों एवं आजादी के दीवानों के पुण्य स्मरण के साथ स्वतंत्रता दिवस की पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जय हिन्द-जय भारत



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

-महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

राजस्थान किसान आयोग द्वारा कृषक संवाद कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के सभागार में 5 अगस्त को संयुक्त निदेशक कृषि (विस्तार) एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थान किसान आयोग, जयपुर का कृषक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. आर.के. धूड़िया द्वारा विश्वविद्यालय के कौशल विकास केन्द्र पर किसान आयोग के अध्यक्ष श्री सी.आर. चौधरी का स्वागत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि किसान आयोग के अध्यक्ष माननीय सी. आर. चौधरी, डूंगरगढ़ विधायक माननीय ताराचन्द सारस्वत, विधायिका बीकानेर (पूर्व) सुश्री सिद्धी कुमारी, जिला अध्यक्ष भाजपा देहात श्री श्याम पंचारिया, भाजपा जिलाध्यक्ष शहर श्रीमती सुमन छाजेड़, जिला प्रमुख श्री मोडाराम मेघवाल, ए.डी.एम. सिटी श्री रमेश देव, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अतिरिक्त निदेशक (कृषि) श्री टी.के. जोशी एवं संयुक्त निदेशक (कृषि) श्री कैलाश चौधरी ने बीकानेर जिले के विभिन्न गांवों से आये किसानों से संवाद किया। किसानों की बिजली, पानी की समस्या, डिग्गी, कृषि विपणन, फसल बीमा, फसल न्यूनतम मूल्य निर्धारण, विभिन्न पशुपालक एवं कृषि योजनाओं में किसानों को मिलने वाली सुविधा एवं सब्सिडी पर चर्चा की गई। मुख्य अतिथि माननीय सी.आर. चौधरी ने सभी समस्याओं को सुना और उनके निराकरण हेतु राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं और कार्य विधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की।



पी.एम. किसान उत्सव दिवस कार्यक्रम में पशुपालकों ने की भागीदारी

वेटरनरी विश्वविद्यालय में किसानों एवं पशुपालकों ने माननीय प्रधानमंत्री की "पी.एम. किसान सम्मान निधि योजना" के ऑनलाइन कार्यक्रम को देखा और सुना। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित के निर्देशन में दिनांक 2 अगस्त को आयोजित इस कार्यक्रम में लूनकरणसर, बीकानेर तहसील के पशुपालक व किसान शामिल हुए। माननीय प्रधानमंत्री किसान द्वारा सम्मान निधि योजना की 20वीं किस्त के तहत 9 करोड़ 70 लाख से अधिक किसानों को 20,500 करोड़ रुपये की सम्मान राशि का हस्तांतरण कर लाभान्वित किया गया। इस योजना के तहत माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा उत्तर प्रदेश के वाराणसी में इस राशि को विड़ियो कांफ्रेंसिंग के जरिए किसानों के बैंक खातों में हस्तांतरण किया गया, ताकि लघु एवं सीमान्त किसानों को आर्थिक सहायता मिल सके। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने उपस्थित पशुपालकों से संवाद भी किया और विश्वविद्यालय की प्रसार गतिविधियों से अवगत करवाया। पशुपालकों को पशुपालन के वैज्ञानिक तरीके एवं नई तकनीकों को अपनाकर पशुपालन को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु सुझाव दिया। विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई व डॉ. अशोक गौड़ ने भी पशुपालकों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. राजेश नेहरा, शिक्षक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी भी उपस्थित रहे। पशुपालकों ने वेटरनरी क्लीनिकल कॉम्प्लेक्स, राठी पशु अनुसंधान केन्द्र व पोल्ट्री फार्म में भ्रमण किया और आधुनिक पशुपालन तकनीक को जाना।



प्रो. राजेश कुमार धूड़िया को निदेशक प्रसार शिक्षा का अतिरिक्त प्रभार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा का अतिरिक्त प्रभार प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने 1 अगस्त को ग्रहण किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव द्वारा जारी आदेश के अनुसार प्रो. धूड़िया को यह अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। इसके पूर्व भी प्रो. धूड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा के पद पर कार्य चुके हैं। प्रो. धूड़िया विभागाध्यक्ष, पशु पोषण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर एवं अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा, राजुवास का अतिरिक्त कार्य भी देख रहे हैं।





कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने ध्वजारोहण कर दी सलामी

स्वाधीनता दिवस के 79वें वर्ष पर वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने ध्वजारोहण कर सलामी दी एवं सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने देश के स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले वीरों को याद किया एवं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज ही के दिन सम्पूर्ण भारतवासियों ने परतंत्रता की बेड़ियों से अपने आप को आजाद करवाया एवं स्वतंत्रता के सुख का अहसास किया। आज हमें हजारों कुर्बानियों के बाद मिली आजादी को अक्षुण्ण रखने, देश की एकता-अखण्डता को कायम रखने, हर एक देशवासी में राष्ट्रवाद का समावेश करने एवं देश के उत्तरोत्तर विकास में हर संभव प्रयास करने का संकल्प लेना चाहिए। कुलगुरु दीक्षित ने कहा कि देश को लम्बी परतंत्रता के बाद हमें आजादी हासिल हुई है। देश में स्वतंत्रता दिवस से पहले विभिन्न संस्थानों में विभाजन की विभिन्निका कार्यक्रम आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य आजादी का मूल्य समझना एवं देश की अखण्डता को बनाये रखना है। कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, अनुसंधान, प्रसार एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियां का जिक्र अपने उद्बोधन में किया। आचार्य दीक्षित ने पशु अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गौवंश संरक्षण, पशुपालको हेतु प्रसार गतिविधियां, संचटक महाविद्यालय जोधपुर में डिप्लोमा एवं स्नातक पाठ्यक्रम शुरू करने का जिक्र किया। आचार्य दीक्षित ने कहा कि पशुचिकित्सा शिक्षा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध, आविष्कारों, ज्ञानवर्धक, कौशल तकनीक का हस्तांतरण कर हमें प्रदेश की उन्नति, कल्याण एवं अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देना होगा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिकारी, डीन-डॉयरेक्टर, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी एन.सी.सी. केड्स एवं आम जन उपस्थित रहे। स्वाधीनता दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में पौधारोपण किया गया। नीम, खेजड़ी, बकेन, गुलमोहर आदि पौधारोपण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, शिक्षकों व अधिकारियों ने बड़े उत्साह में शामिल होकर पौधे रोपित किए एवं इनकी नियमित देखभाल एवं रक्षा का प्रण लिया। विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।



पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र द्वारा जागरूकता कार्यक्रम

वेटेनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र द्वारा 8 अगस्त को हल्दीराम राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, हनुमान हत्था, बीकानेर में छात्राओं हेतु एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि जागरूकता कार्यक्रम के दौरान केंद्र के सह-अन्वेषक डॉ. देवेंद्र चौधरी ने अस्पतालों से निकलने वाले जैविकीय अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य व वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की एवं जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट से होने वाले संक्रामक रोगों से बचाव एवं जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का कैसे उचित निस्तारण किए जाने के बारे में भी बताया। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित करवाई गई जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के प्राचार्य श्री परमेश्वर स्वामी, कौशल यादव व अन्य अध्यापक उपस्थित रहे।



वेटेनरी महाविद्यालय, बीकानेर का 72वां स्थापना दिवस

वेटेनरी महाविद्यालय, बीकानेर के 72वें स्थापना दिवस का कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में 18 अगस्त को भव्यता पूर्वक आयोजन किया गया। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि वेटेनरी महाविद्यालय बीकानेर के स्थापना 16 मई 1954 में हुई और अपनी स्थापना से ही यह महाविद्यालय पशु चिकित्सा एवं पशुधन संवर्धन के क्षेत्र के उत्कृष्ट सेवाएं दे रहा है। कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने कहा की यहां के विद्यार्थियों के लिए इस महाविद्यालय के एलुमनाई होना एक गर्व की बात है। यहां से सीखे ज्ञान कौशल को पशुचिकित्सा एवं किसानों के कल्याण हेतु उपयोग करना तथा इस महाविद्यालय का नाम रोशन करना विद्यार्थियों का प्रमुख उत्तरदायित्व है। कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने वेटेनरी क्षेत्र में छात्राओं की बढ़ती रुचि एवं रोजगार के अपार अवसरों का भी जिक्र किया। अधिष्ठाता वेटेनरी महाविद्यालय प्रो. हेमन्त दाधीच ने महाविद्यालय के गौरवमय इतिहास के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की एवं देश-विदेश में महाविद्यालय के पास आउट विद्यार्थियों के योगदान का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि राज्य में दुग्ध उत्पादन एवं पशुपालकों की आजीविका उत्थान में इस महाविद्यालय का अभूतपूर्व योगदान है। कार्यक्रम के दौरान अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. पंकज कुमार थानवी ने धन्यवाद ज्ञापित किया एवं मंच संचालन डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा ने किया। स्थापना दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। इस दौरान महाविद्यालय के स्थापना एवं इसके अभूतपूर्व योगदान पर जनसम्पर्क प्रकोष्ठ, राजुवास द्वारा तैयार मूवी का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के दौरान अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन एवं निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक मानव संसाधन प्रो. राहुल सिंह पाल, महाविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव, शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।





राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 कार्यान्वयन, चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षक महासंघ, राजस्थान (उच्च शिक्षा) के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 कार्यान्वयन, चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर दिनांक 20 अगस्त को वेटेनरी महाविद्यालय, बीकानेर में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता महामंत्री, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, राजस्थान (उच्च शिक्षा) श्री रिछपाल सिंह राठौड़ ने अपने उद्बोधन में बताया की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टीकोण प्रस्तुत करती है। उन्होंने कहा कि बुनियादी ढांचे की कमियां और नियामकीय देशी जैसी चुनौतियों से निपटने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुकूल, समावेशी और भविष्य उन्मुख शिक्षा प्रणाली युक्त लक्ष्य प्राप्त किये जा सकते हैं। इस अवसर पर कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण भाषा, देश में विविधता एक शक्ति, पौराणिक चिकित्सा पद्धति, गुरुकुल शिक्षा नीति आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की एवं बताया कि भारत ज्ञान, कौशल एवं नवाचारों में विश्वगुरु रहा है। वर्तमान शिक्षा नीति भारत की मौलिक शिक्षा नीति नहीं है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों को बहुभाषाओं एवं बहुविषयों को चुनने एवं सिखने का अवसर मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा के मौलिक अधिकार के साथ-साथ सतत शिक्षा एवं अनुभवात्मक शिक्षा को भी महत्व दिया गया जो कि रोजगारोन्मुखी शिक्षा है। कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने कहा कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को भारत के पौराणिक शिक्षा के मूल सिद्धान्तों एवं आधारों को समझना होगा तभी हम सच्चे अर्थों में स्वयं को विश्वगुरु के रूप में स्थापित कर पाएंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पश्चिम क्षेत्र प्रमुख, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, राजस्थान (उच्च शिक्षा) प्रो. दिग्विजय सिंह शेखावत ने बताया की बताया की शिक्षा एक विकसित राष्ट्र के निर्माण की आधार शिला है। भारत एक विकसित राष्ट्र के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इस कड़ी में एक अहम सौपान सिद्ध होगी। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, न्यायसंगत और भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाना है। कार्यक्रम के दौरान धन्यवाद ज्ञापन अधिष्ठाता वेटेनरी महाविद्यालय प्रो. हेमन्त दाधीच ने किया एवं मंच संचालन डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा ने किया। इस दौरान विश्वविद्यालय के डीन-डॉयरेक्टर, शिक्षक, बीकानेर जिले के महाविद्यालयों के शिक्षकगण, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा दिनांक 8 एवं 11 अगस्त को गांव सकतपुर एवं मरेना में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 31 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा दिनांक 4, 6, 13, 27 एवं 29 अगस्त को गांव रंगपुर, चण्डिदा, देवली माचियान, नगपुरा एवं भोजपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 64 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू द्वारा 11, 13 एवं 14 अगस्त को गांव बड़वासी, खिरोड़ एवं भगेरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों

का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 53 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 27 अगस्त को गांव पारलिया में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 38 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 7, 13, 19 एवं 29 अगस्त को गांव कीकरालिया, भगवानसर बास, लालनिया एवं गुड्डिआ गांवों में तथा दिनांक 20-26 अगस्त को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 126 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





मानसून में जुगाली करने वाले पशुओं में परजीवी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण

भारत में पशुधन कृषि का अभिन्न हिस्सा है और यह देश की आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। देश के अधिकांश किसान गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सुअर, और घोड़े जैसे विभिन्न प्रकार के पशुओं का पालन-पोषण करते हैं। मानसून का मौसम हालांकि जीवन की दृष्टि से आवश्यक है, लेकिन यह पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अनेक तरह की चुनौतियाँ लेकर आता है। मानसून के दौरान जलभराव एवं उच्च आर्द्रता जैसे पर्यावरणीय कारक परजीवी और अन्य रोगजनकों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, जिससे पशुओं में परजीवी संक्रमण काफी बढ़ जाता है।

मानसून के इस मौसम में पशुधन को विशेष सावधानी और देखभाल की आवश्यकता होती है। भारी बारिश, तेज हवाएं और ओलावृष्टि पशुओं के लिए आश्रय की आवश्यकता बढ़ा देते हैं, क्योंकि वे अपने आप को इन प्राकृतिक आपदाओं से बचा नहीं पाते। इस मौसम के दौरान पशुओं में परजीवी और अन्य संक्रमणों के फैलने का खतरा अन्य मौसमों की तुलना में दोगुना हो जाता है। वातावरण में नमी की अधिकता हानिकारक परजीवियों के संक्रमण और विकास के लिए उपयुक्त माहौल बनाती है, जिसके परिणामस्वरूप थैलेरियोसिस, फासियोलोसिस, एम्फिस्टोमोसिस, बेबीसोसिस जैसी गंभीर बीमारियाँ होती हैं। मानसून शुरू होने से पहले और इसके दौरान पशुओं का नियमित रूप से कृमिनाशक से उपचार करना अत्यंत आवश्यक है। यह आंतरिक परजीवियों के संक्रमण से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है। इसके साथ ही बाहरी परजीवियों जैसे टिक (टिक्स) और माइट का नियंत्रण करने के लिए पशुशालाओं में कीटनाशकों का नियमित छिड़काव करना जरूरी है। मक्खियों के संक्रमण को रोकने के लिए गाय-भैंस के गोबर, बचा हुआ चारा, और मूत्र को साफ-सुथरा रखना चाहिए ताकि वे परजीवी और कीड़ों के प्रजनन का केंद्र न बनें। पशुओं को स्वस्थ और मजबूत बनाए रखने के लिए संतुलित और पोषणयुक्त आहार उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। उचित पोषण न केवल उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है, बल्कि आंतरिक और बाहरी परजीवियों के प्रभाव को भी कम करता है। इसके अलावा पशुओं के बीच भीड़भाड़ न हो, इसका ध्यान रखें क्योंकि निकटता से संपर्क में आने पर टिक्स और अन्य बाहरी परजीवियों के संक्रमण की संभावना अधिक होती है। चरागाह का चुनाव करते समय भी सावधानी बरतनी चाहिए। अत्यधिक भीड़भाड़ से चरागाह में खाद्य के अंश अधिक मात्रा में जमा हो जाते हैं, जिससे संक्रामक कृमि लार्वा का प्रसार बढ़ता है और चरागाह प्रदूषित हो जाता है। यह पशुओं के स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक होता है। परजीवी रोगों के प्रति संवेदनशीलता में आनुवंशिकी का भी महत्वपूर्ण योगदान है। आमतौर पर देखा गया है कि किसी झुंड में लगभग 20 प्रतिशत पशु ही 80 प्रतिशत परजीवियों को अपने शरीर में आश्रय देते हैं। ऐसे पशुओं की पहचान कर उनका झुंड से पृथक्करण कर देना संक्रमण नियंत्रण के लिए जरूरी है। हालांकि, वर्तमान समय में इस पहचान में तकनीकी चुनौतियाँ हैं, लेकिन भविष्य में आधुनिक तकनीकें इसे और सुविधाजनक और व्यवहार्य बना सकेंगी।

अंत में अपने पशुपालन के संचालन की विशेष आवश्यकताओं और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप एक व्यापक और समन्वित परजीवी नियंत्रण कार्यक्रम बनाना चाहिए। इसके लिए अनुभवी पशुचिकित्सक से परामर्श लें और उनके मार्गदर्शन में नियमित नियंत्रण उपाय अपनाएं। इस प्रकार आप मानसून के दौरान अपने बड़े जुगाली करने वाले पशुओं को परजीवी रोगों से सुरक्षित रख सकते हैं और उनकी उत्पादकता एवं स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं।

डॉ. दीपक सुंवरिया, डॉ. अभिषेक गुप्ता, डॉ. विक्रान्त सुंदन
वैटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

वर्षा ऋतु में पशु आवास में सूक्ष्म वातावरण प्रबंधन

भारत में वर्षा ऋतु खेती-बाड़ी के लिए अमृत समान मानी जाती है, लेकिन यह मौसम पशुपालकों के सामने कई चुनौतियाँ भी लेकर आता है। पशुशाला के भीतर का सूक्ष्म वातावरण अत्यधिक प्रभावित होता है, जिससे पशुओं का स्वास्थ्य उत्पादकता और कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सूक्ष्म वातावरण का तात्पर्य है, वह स्थानीय जलवायु जो पशुशाला के भीतर होती है और जो बाहर की जलवायु से भिन्न होती है, इसमें तापमान, आर्द्रता, वायु प्रवाह, गैसों की मात्रा, प्रकाश व्यवस्था, फर्श की स्थिति आदि कारक होते हैं:

वर्षा ऋतु में पशुशाला की प्रमुख समस्याएं:

अत्यधिक आर्द्रता और गैसों का जमाव: वर्षा के कारण पशुशाला में 80-90 प्रतिशत सापेक्षिक आर्द्रता पाई जाती है जिससे अमोनिया जैसी गैस जमा होकर पशुओं की आंखों व श्वसन तंत्र को नुकसान पहुंचाती है।

तापमान अस्थिरता: ताप-आर्द्रता सूचकांक के कारण हीट स्ट्रेस और नवजात में हाइपोथर्मिया जैसे गंभीर हालात उत्पन्न हो सकते हैं। हाइपोथर्मिया का मतलब है शरीर का तापमान सामान्य से कम हो जाना।

वायु संचार की कमी: नमी और बंद वातावरण से बैक्टीरिया, फफूंद और परजीवियों की वृद्धि होती है।

गीला और फिसलन भरा फर्श: कीचड़ से पशुओं में पैर की सड़न (फुट रॉट), थनैला (मैस्टाइटिस) जैसी बीमारियाँ हो जाती है।

परजीवी संक्रमण का खतरा: मक्खी, मच्छर और चिचड़ी से एनाप्लाज्मोसिस, ट्रिपैनोसोमायासिस जैसी जानलेवा बीमारियाँ फैलती है।

छत और फर्श का सुधार: छत पर थैचिंग यानी की घास, पुआल या किसी अन्य सुखी वनस्पति या फाल्स सीलिंग का उपयोग करें, जिससे पशुशाला का उचित तापमान बना रहता है साथ ही फर्श को ढलानदार बनाकर जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।

उचित वायु संचार: पशुशाला में चिमनी, वेंट, निकास पंखा और जालीनुमा खिड़कियों का प्रयोग करें।

स्वच्छता व कीट नियंत्रण: पशुशाला में चूना, फिनाइल और कीटनाशक का नियमित छिड़काव करे तथा गोबर को समय पर हटाएं।

स्वास्थ्य सुरक्षा: बारिश से पहले सभी पशुओं का टीकाकरण एवं कृमिनाशक करवाएं।

पोषण प्रबंधन: साइलेंज, हे और यूरिया मोलासेस खनिज ईट जैसे संचित चारे का प्रयोग करें।

अन्य सुझाव: वर्षा ऋतु में पशुओं को चरागाहों में ले जाने से बचना चाहिए। गीली घास और कीचड़ में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है इसलिए पशुओं को सूखे और साफ स्थान पर रखना बेहतर है। साथ ही वर्षा के समय पशुओं को खुले में न बांधें, नवजात को गीले फर्श से बचाएं एवं नियमित तौर पर पशुओं की जांच करावें।

निष्कर्ष: वर्षा ऋतु में पशुशाला की सूक्ष्म जलवायु का बेहतर प्रबंधन न केवल पशुओं को बीमारियों से बचाता है, बल्कि उनके दूध, वजन और प्रजनन उत्पादन को स्थिर बनाए रखने में सहायक होता है। यह मौसम चुनौती भरा जरूर है, लेकिन उचित वैज्ञानिक प्रबंधन से इसे अवसर में बदला जा सकता है।

“स्वस्थ पशु, समृद्ध किसान और आत्मनिर्भर भारत”
यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

डॉ. मुकेशचन्द्र शर्मा, डॉ. ललित बिश्नोई
वैटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)



बारिश के मौसम में पशुओं का रख-रखाव और प्रबंधन

बारिश का मौसम एक और जहां भीषण गर्मी से राहत दिलाता है वंही दूसरी ओर पशुपालकों के लिए कई चुनौतियां भी लेकर आता है। इस दौरान वातावरण में नमी, बदलते तापमान और कीचड़ भरी परिस्थितियों के कारण पशुओं में बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। पशुओं को स्वस्थ रखने और उनके उत्पादन को बनाएं रखने के लिए उचित प्रबंधन और देखभाल अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आवास का उचित प्रबंधन

सूखा और हवादार स्थान:

पशुओं के लिए ऐसा स्थान सुनिश्चित करें जो सूखा और हवादार हो। बारिश का पानी अंदर न आए और नमी जमा न हो। साथ ही पशुशाला की नियमित रूप से साफ-सफाई करें और कीटाणुनाशकों का प्रयोग करें जिससे कीटाणु नहीं पनपें।

उचित जल निकासी:

पशुशाला के आसपास जल निकासी की व्यवस्था सही होनी चाहिए ताकि पानी जमा न हो। जमा हुआ पानी मच्छरों और अन्य कीटों के पनपने का कारण बन सकता है।

बिछावन का ध्यान:

बिछावन को नियमित रूप से बदलते रहें और सूखा रखें। गीला बिछावन त्वचा संक्रमण और खुर सम्बन्धित समस्याओं को जन्म दे सकता है।

पोषण और चारा प्रबंधन

पौष्टिक चारा:

बारिश के मौसम में हरा चारा प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होता है लेकिन इसकी गुणवत्ता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। सुनिश्चित करें की चारा साफ और फफूंद रहित हो।

संतुलित आहार:

पशुओं को संतुलित आहार दे जिसमें प्रोटीन, ऊर्जा, विटामिन और खनिज सही अनुपात में हो। इससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी।

शुद्ध पेयजल:

पशुओं को हमेशा शुद्ध और ताजा पानी उपलब्ध कराएं। दूषित पानी से पशुओं में पेट सम्बन्धी बीमारियां हो सकती हैं।

अचानक बदलाव से बचे:

पशु चारे में अचानक बदलाव न करें, क्योंकि इससे पशुओं में पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। यदि नए चारे को शामिल कर रहे हैं तो धीरे-धीरे करें।



पशु स्वास्थ्य और बीमारी की रोकथाम

टीकाकरण:

बारिश से पहले और इसके दौरान पशुओं को संक्रामक रोगों जैसे खूरपका-मुंहपका, गलघोंटू आदि के लिए आवश्यक टीके लगवाएं।

परजीवी नियंत्रण:

आंतरिक (जैसे पेट के कीड़े) और ब्राह्म (जैसे चिचड़ी, जू) परजीवियों का नियंत्रण महत्वपूर्ण है। नियमित रूप से कृमिनाशक दवाएं दे और पशुशाला में कीटनाशकों का छिड़काव करें।

रोगों के लक्षण पहचाने:

पशुओं में सुस्ती, भूख कम लगना, असामान्य स्त्राव, दस्त या श्वास लेने में तकलीफ जैसे लक्षणों पर तुरंत ध्यान दें और पशुचिकित्सक से संपर्क करें।

विशेष ध्यान देने योग्य बातें:

गर्भवती एवं नवजात पशुओं का विशेष ध्यान रखें। उन्हें अलग और सुरक्षित स्थान पर रखें साथ ही अतिरिक्त पोषण प्रदान करें। बाढ़ की स्थिति में यदि आपके क्षेत्र में बाढ़ आने की संभावना है तो पशुओं को ऊंचे और सुरक्षित स्थान पर ले जाने की योजना पहले से तैयार रखें, पशुओं के लिए चारे और पानी का पर्याप्त भण्डारण करें। बारिश का मौसम पशुओं के लिए आरामदायक भी हो सकता है, बशर्ते पशुओं की उचित देखभाल और प्रबंधन किया जायें। नियमित निगरानी, स्वच्छता, उचित पोषण और समय पर टीकाकरण से पशुओं को स्वस्थ रखा जा सकता है और पशुपालक इस मौसम में होने वाले नुकसान से बचा सकते हैं।

डॉ. नरसीराम गुर्जर

वैटरनरी कॉलेज, बीकानेर।



पशुओं में खुरपका-मुंहपका रोग व उनकी रोकथाम

खुरपका और मुंहपका एक गंभीर और अत्यधिक संक्रामक वायरस जनित रोग है, जो मुख्यतः गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और अन्य खुर वाले पशुओं को प्रभावित करता है। इस रोग के वायरस के कुल सात अलग-अलग सीरोटाइप होते हैं O, A, C, SAT1, SAT2, SAT3 और Asis11 ये सभी सीरोटाइप प्रतिरक्षा की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न होते हैं, जिसका अर्थ है कि यदि कोई पशु एक सीरोटाइप से संक्रमित हो गया है तो दूसरे सीरोटाइप से फिर से संक्रमण हो सकता है। एक प्रकार के संक्रमण से दूसरे प्रकार के विरुद्ध कोई प्रतिरक्षा नहीं बनती।

भारत में वर्तमान में एफ.एम.डी वायरस के तीन प्रमुख सीरोटाइप सक्रिय रूप से पाए जाते हैं। O, A और Asis11 इनमें से सीरोटाइप O सबसे अधिक प्रचलित है, इसके बाद Asis11 और फिर A का स्थान आता है। यह बीमारी पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान पहुंचा सकती है। पालतू पशुओं में इसके संक्रमण की संभावना देशी नस्लों की तुलना में अधिक होती है। इसके अलावा, दूध देने वाली मादा पशुओं में यह रोग दूध उत्पादन में भारी गिरावट लाता है।

लक्षण: बुखार, मूंह, जीभ, होंठ, खुर और थनों पर छाले, लंगडाना या चलने में दिक्कत, भूख नहीं लगना और वजन कम होना, दूध उत्पादन में भारी कमी, छोटे पशुओं में अचानक मौत, खासकर मायोकार्डाइटिस की वजह से होती है।

संक्रमण: संक्रमित पशु की लार, पेशाब, गोबर, दूध और श्वास से, संक्रमित पशु के सम्पर्क में आने से, दूषित चारा-पानी, पशु बाड़े वाहन या उपकरणों से, हवा के जरिए पास के क्षेत्रों में फैलता है।

मानव स्वास्थ्य: खुरपका-मुंहपका रोग को आमतौर पर मनुष्यों में फैलने वाली बीमारी नहीं माना जाता है। यह बीमारी मुख्य रूप से पशुओं में ही होती है और मानव स्वास्थ्य के लिए कोई बड़ा खतरा नहीं होती।

प्रयोगशाला जांच: इसके लक्षण देखकर शक हो सकता है लेकिन इसकी सही पहचान के लिए प्रयोगशाला जांच जरूरी होती है। अन्य कुछ बीमारियां भी इसके जैसे लक्षण देती हैं, इसलिए सही जांच जरूरी है।

रोकथाम और नियंत्रण: संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग करें और बीमारी की तुरंत रिपोर्ट करें। झुंड में नए पशु लाने से पहले उनकी जांच करावें। बाड़े, वाहन और उपकरणों को नियमित रूप से साफ और सैनिटाइज करें। गोबर और मृत पशुओं का सही तरीके से निपटान करें।

टीकाकरण: गाय और भैंसों को पहला टीका-4 महीने की उम्र में दिया जाता है, फिर हर 6 महीने में बूस्टर डोज। बकरियों को पहला टीका 3-4 माह की उम्र में दिया जाता है और फिर हर साल दोबारा टीकाकरण किया जाता है।

टीकाकरण करते समय ध्यान रखें: टीकाकरण अभियान जल्दी और सभी पशुओं तक पहुंच कर पूरा किया जाना चाहिए। टीका सही समय पर सही मात्रा में दिया जाये। मौं से मिले रोग प्रतिरोधक प्रभाव टीके को प्रभावित न करें इसका भी ध्यान रखें। यदि इन उपायों का पालन किया जाए तो एफएमडी को रोका और नियंत्रित किया जा सकता है और पशुपालन से होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है।

आर्थिक महत्व: पशुओं की उत्पादकता पर गहरा असर डालता है। इससे दूध उत्पादन में गिरावट, जिससे डेयरी किसानों व पशुपालकों की आय पर असर पड़ता है। पशुओं की मृत्यु जिससे पशुधन की सीधी हानि होती है। प्रजनन संबंधी समस्याएं जैसे गर्भपात, बांझपन और प्रजनन चक्र में गड़बड़ी पैदा कर सकता है, जिससे झुंड की उत्पादकता घटती है, जो देश की आर्थिक व्यवस्था और पशुपालन क्षेत्र में प्रभाव डालती है।

निष्कर्ष: खुरपका-मुंहपका रोग केवल पशुओं की बीमारी नहीं है, यह कृषि, व्यापार और जनस्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। इसकी रोकथाम, नियंत्रण और जागरूकता बहुत जरूरी है ताकि आर्थिक नुकसान को कम किया जा सके और पशुपालन क्षेत्र को सुरक्षित रखा जा सके।

डॉ. प्रकाशचन्द्र सांवल

सहायक आचार्य, वेटेनरी कॉलेज, नवानिया (उदयपुर)

सफलता की कहानी

चन्द्रभान ने साहीवाल गोवंश पालन से अपने क्षेत्र में बनायी पहचान

श्री चन्द्रभान पुत्र श्री उमाशंकर मीणा शिक्षा स्नातकोत्तर कृषि के साथ साथ पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाकर सामाजिक व आर्थिक स्तर मजबूत कर रहे हैं। हम बात कर रहे हैं गांव-राजनगर, तहसील लाड़पुरा, जिला-कोटा के पशुपालक की जो अपनी मेहनत से डेयरी व्यवसाय को अपनाकर सफलता की ओर अग्रसर हैं। चन्द्रभान के पास 10 बीघा कृषि भूमि है एवं पशुपालन को शुरू से अपनाया हुआ है लेकिन दो वर्ष पूर्व उनके मन में साहीवाल स्वदेशी गोवंश पालन को वृहद स्तर पर अपनाने के लिए प्रेरित हुए। इन्होंने गंगानगर, हनुमानगढ़, पंजाब और हरियाणा से 20 साहीवाल गोवंश खरीद कर स्वदेशी गोवंश पालन की शुरुआत की और आज एक सफल पशुपालक हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा राजनगर गांव में समय-समय पर पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाते रहे हैं। प्रशिक्षण शिविर के दौरान चन्द्रभान मीणा अन्य पशुपालकों के साथ केन्द्र के सम्पर्क में आये। वर्तमान में इनके पास 20 साहीवाल गोवंश हैं व 16 वत्स हैं। इनके यहां प्रतिदिन 90 से 100 लीटर दूध उत्पादन होता है। उत्पादित दूध को कोटा शहर में स्थानीय उपभोक्ताओं को सप्लाई करते हैं साथ ही घी भी बनाते हैं, इससे इनकी शुद्ध वार्षिक आय लगभग पांच लाख रुपये तक हो जाती है। इस कार्य के लिए दो स्थानीय लोगो को रोजगार भी दे रखा है। चन्द्रभान अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को ही महत्व देते हैं। निकट भविष्य में सेक्सड सीमन एवं भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक को भी अपनाने की इच्छा रखते हैं। पशुओं के लिए चारा अपने खेत से पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। इनके पास इलेक्ट्रिक चॉफ कटर भी है पशुओं के लिए प्राथमिक उपचार बॉक्स स्वयं रखते हैं एवं जरूरत पड़ने पर पशुचिकित्सक की सेवाएं लेते हैं। प्रशिक्षण के दौरान इन्होंने कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, सन्तुलित पशु आहार एवं अजोला आदि की जानकारी प्राप्त की है। पशुपालन की उन्नत वैज्ञानिक तकनीको को अपनाकर इन्होंने क्षेत्र में अपनी एक अलग ही पहचान बनायी है। ये साहीवाल गोवंश के उन्नयन एवं संवर्धन के लिए प्रयासरत हैं। कृषि एवं पशुपालन से घर-परिवार एक खुशहाल जीवन जी रहे हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा इनको समय-समय पर पूरा सहयोग किया जाता है। चन्द्रभान मीणा अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के साथ-साथ पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा को भी देते हैं।



सम्पर्क- चन्द्रभान मीणा (मो.9950162067)

गांव-राजनगर, तह. लाड़पुरा जिला कोटा।



पशुओं के आहार में हरे चारे का उचित उपयोग सुनिश्चित करें



हमारे देश में मानसून के आगमन के साथ प्रचुर मात्रा में हरे चारे की उपलब्धता बढ़ जाती है। पशुओं की क्षमता के अनुसार अधिक उत्पादन के लिए सालभर हरा और पौष्टिक चारा खिलाना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में कम क्षेत्र में अधिक चारा उत्पादन के लिए हमें सघन खेती योजना में अच्छे फसल चक्र का चुनाव करना होगा। अच्छे फसल चक्र का तात्पर्य है कि साल में तीन बार हरे चारे की खेती करना उपयुक्त है। इन चारे में अदलहनी कुल की फसलें जैसे ज्वार, बाजरा, जौ, जई,



नेपियर आदि के साथ-साथ फलीदार चारे की फसलें जैसे रिजका व बरसीम, चंवला, ग्वार आदि की खेती श्रेष्ठतम है। फलीदार फसलों में प्रोटीन, कैल्शियम, मैग्नीशियम तथा फॉस्फोरस की प्रचुर मात्रा होती है जबकि अदलहनी कुल की चारा फसलों में कॉर्बोहाइड्रेट भरपूर होता है। अतः दोनों तरह की चारा फसलों को काटकर एक साथ मिलाकर खिलाने से आवश्यक सभी पौष्टिक तत्वों की पूर्ति हो जाती है और पशु को संतुलित आहार मिल जाता है। द्विबीज पत्री वाली फसलों में मुख्यतः वार्षिक रबी फसल में बरसीम, रिजका तथा खरीफ में लोबिया, ग्वार की फसलें उगाने के लिए उपयुक्त रहती है। एक बीजपत्री फसलों में रबी में जई, सर्दियों की मक्का व खरीफ फसल में मक्का, ज्वार, बाजरा आदि मुख्य चारे की घासों हैं। चारा फसलों के लिए हमेशा प्रमाणित बीजों का ही उपयोग करें। हरे चारे की पौष्टिकता बनाए रखने के लिए फसल की दूधिया अवस्था अथवा लगभग आधे फूल लगने पर काट कर खिलाना चाहिए। कम पानी व अत्यधिक उष्ण क्षेत्र में बहुवर्षीय सेवण व धामण जैसी बहुमूल्य घास को भी उगा कर चारे की जगह काम में लिया जा सकता है। बहुवर्षीय अंजन घास अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के लिए सबसे उत्तम चारे वाली घासों में एक है। मृदा में नमी होने के अनुरूप अंजन घास की अगस्त से अप्रैल तक 3-4 कटाई की जा सकती है। बरमूडा घास या दूब वर्ष भर उगती रहती है लेकिन गर्म व नमी अवस्थाओं में विशेष रूप से सक्रिय रहती है। एक वर्षीय घासों में "लाम्प" व "मकड़ा" पर्वतों के ढालों व सड़क के दोनों ओर उगी देखी जा सकती है जो कम वर्षा वाले क्षेत्र की शुष्क भूमि में उगती है। बलुई भूमि में गठिल व मूरठ घासों 'हे' बनाने के लिए उपयुक्त है। सभी प्रकार की मृदाओं में एक वर्षीय ग्रीष्म ऋतु की सूडान घास को 'हे' व साइलेज बनाने हेतु व हरे चारे के रूप में उपयोग में लिया जाता है। हरे चारे का उचित उपयोग करने से पशुओं को कुपोषण, बांझपन, गर्भपात, ग्याभिन न होना, शारीरिक कमजोरी, देरी से परिपक्व होना, वृद्धि में कमी, अंधापन, पेट छूटना या उत्पादन में कमी जैसी अनेक समस्याओं से राहत दिलाई जा सकती है।

“धीणे री बात्यां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया

संपादक

डॉ. संजय सिंह

डॉ. वैशाली

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

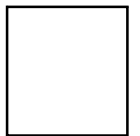
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवा

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया